International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 04-12-2019; Accepted: 04-01-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 1; January 2020; Page No. 23-24

तुलसीदास की समन्वय भावना

रीना रानी
सहायक प्रवक्ता, (हिन्दी विभाग), आई0बी0 (पी0जी0) कॉलेज, पानीपत, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

तुलसीदास जी हिन्दी साहित्य के महान मनीषी, चितंक, मस्त व जन कवि है हिन्दी में सर्वश्रेष्ठ कवि एंव भक्त शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास ने तत्कालीन सामन में व्याप्त कटुता, ईर्ष्या, हेष, विषमता, वैमनस्य को दूर करने का प्रयास करते हुऐ धर्म, राजनीति, समाज साहित्य आदि क्षेत्रों में समय स्थापित करने का स्तुत्य प्रयास किया । उन्होने लोक और शास्त्र में, सगुण–निर्गुण में, विभिन्न देवी–देवताओं में, राजा–प्रजा में, उॅच –नीच में, गृहस्थ–वैराग्य और ईर्ष्या –हेष को कम करने की यथासंभव कोशिश की आचार्य रामचन्द शुक्ल जी का कहना है ''जिस प्रकार उन्होंने लोक, धर्म और साधना को एक में सम्मिलित कर दिखाया। उसी प्रकार कर्म ज्ञान और उपासना के बीच सामंजस्य उपस्थित किया। भक्ति की चरम सीमा पर पहुॅचकर भी लोकपक्ष उन्होंने नही छोडा, लोकसंग्रह का भाव उनकी भक्ति का एक अगं है ''

तुलसी की समन्वय भावनाः समन्वय भारतीय संस्कृति की महत्वपूर्ण विशेषता रही है समन्वय को आधार बनाने वाले, लोकनायक तुलसीदास ने अपने समय की जनता के हदय की धडकन को पहचाना और 'रामचरितमानस' के रूप में समन्वय का अद्भूत आदर्श प्रस्तुत किया। तुलसीदास जी ने राम भक्ति की नौका के सहारे समंवय का संदेश दिया। लेंकिन उनके सबंध में यह ध्यान रहे कि वह समंवय के कवि है समझौते के नहीं । डॉ दुर्गाप्रसाद भी सही मानते हैं, ''तुलसी ने एक हद तक समन्वय का मार्ग अपनाया है। लेंकिन समंवय ही समझौते का नही। उन्हें जहॉ कहीं और जिस किसी भी रूप में लोक–जीवन का अमंगल करने वाली प्रवृति दिखाई दी है, उनका उन्होंने डटकर विरोध भी किया है। वॅहां धोडा भी नही चुके है।

आचार्य हजारी द्विवेदी जी ''तुलसी को लोकनायक की संज्ञा देते है वे तुलसी के काव्य मे समंवय की प्रवृत्ति को स्पष्ट करते हुऐ कहते है'' लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय कर सके, क्योकि भारतीय जनता में नाना प्रकार की परस्पर विरोधनी संस्कृतियॉ, साधनाऍं, जातियॉ, आचार, निष्ठा और विराट चेष्टा है। लोक और शास्त्र का समन्वय ? और वैराग्य का समन्वय, निर्गुण और सगुण का समन्वय, पंडित्य और अपांडित्य का समन्वय है। रामचरितमानस शुरू से अंत तक समन्वय काव्य है।''

तुलसीदास एक चिंतक, भक्त और जन कवि है। तुलसीदास समाज में जाति–पॉति और अस्पृश्यता का बोलबाला था उच्च वर्ण के व्यक्ति निम्न–वर्ण के व्यक्तियों को हेय की दृष्टि से देखते थे। ऐसे में तुलसी ने सामजिक विषयताओं को दूर करके ऐसा मंच तैयार किया कि, अपने–पराये का भेद मिट गया। राम और निषादराज तथा भरत और निषादराज की भेंट भी समन्वय का उज्जवल आदर्श प्रस्तुत करती है।

''करत दंडवत देखि तेहि भरत लीन्ह उर लाई।
मनहुॅ लखन सब भेंट भइ प्रेम लन हदयॅ समाई।।''–2

समन्वय की विचारधार को सशक्त बनाने के लिए तुलसी ने अपने युग परिस्थितियों का गंम्भीर अध्ययन और विवेचन किया होगा तभी तो उन्होंने इन विषयताओं को समाप्त करने के लिए समन्वत का मार्ग अपनाया। उन्होंने शिव के मुख से ''सोई सैम इष्टदेव रघुनीरा सेवत जाति सदा मुनिधीरा, कहलवा कर शिव को राम का उपासक घोषित किया तो राम के मुख से–

संकर प्रिय मन द्रोही सिव द्रोही मम दास।
ते नर करहिं कल्प भरि घोर नरक महुॅ वास

कहलवाकर राम को शिव का अनन्य भक्त घोषित किया। उन्होंने हरि हर पद रति मति न कुतरकी कह शिव और विष्णु में एकात्व की स्थापना की उन्होंने द्वैत–अद्वैत, विद्या–अविद्या, माया और प्रकृति, जगतसत्य और असत्य, जीव का भेद, अभेद, भाग्य एंव पुरूषार्थ तथा जीवनमुक्ति एंव विदेहमुक्ति जैसे दार्शनिक विचारधाराओं के बीच समन्वय स्थापित किया। तुलसी के दार्शनिक समन्वय को स्पष्ट करते हुए शिवदान सिंह चौहान कहते है''तुलसीदास के दार्शनिक समन्वय को देखते हुऐ यह नही भूल जाना चाहिए कि, तुलसी लोक–मर्यादा, वर्ण–व्यवस्था, सदाचार–व्यवस्था और श्रुति–सम्मत होने का ध्यान सदा रखते है''–4

वही दुसरी और उन्होंने भक्ति और ज्ञान में कोई भेद नही किया है। क्योंकि वे दोनो ही सांसारिक क्लेशों का नाश करने वाले, कहकर भक्ति और ज्ञान में अभेद स्थापित किया––

कहहि सन्त मुनि बेद पुराना।
नहि कुछ दुर्लभ ग्यान समाना।।'' –5
भगतिहि ग्यानहि नहि कुछ भेद।
उभर हरहि भव सभंव खेदा।।'' –6

उपसंहार

तुलसी ने तत्कालीन संस्कृतियों, जातियों, धर्मलिबिंयो के बीच समन्वय स्थापित करके दिशाहीन समाज को नई दिशा प्रदान की। समन्वय का यह भाव उनकी अनुभूति एंव अभिव्यक्ति में भी झलकता है कवि की भाषा सहजता, सरलता और उत्कल सम्प्रषणीयता मानवमूल्यों को जोडती है तुलसी के काव्य में संस्कृत, अवधी, ब्रजभाषा आदि भाषाओं का सुदंर सामंजस्य

मिलता है इस प्रकार विषय परिस्थिति में तुलसी की लोकपरक दृष्टि एंव समन्वयवादी विचारधारा ही मानवजाति को मानसिक एंव आत्मिक शान्ति प्रदान कर सकती है।

संदर्भ सूची

1. आचार्य रामचन्द शुल्क, हिन्दी साहित्य का इतिहास
2. डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य की भूमिका पृ0 स0 10।
3. तुलसीदासः रामचरितमानस आयोहयाकाण्ड, दोहा–193
4. तुलसीदासः रामचारिमानस आयोध्याकाण्डा, दोहा–2।
5. शिवदान सिंह चौहान : दार्शनिक विचार और समन्वयवाद
6. तूलसीदास रामचरित्रमानस 114 ख
7. तलसीदास रामचरित्रमानस 114 ख 7